अमृत कलश टाइम्स

http://amritkalashtimes.com

वर्ष : 18
अंक : 133

प्रयागराज बुधवार 29 जनवरी 2025

पृष्ठः- 4, मूल्यः- एक रूपया

बागपत में भगवान आदिनाथ के निर्वाण लड्डू चढ़ाने को बना पैड गिरा ,कई हताहत

● बागपत हादसे का योगी ने लिया संज्ञान,घायलों के इलाज के निर्देश

बागपत,(एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बागपत जिले में मंगलवार सुबह हुये हादसे का संज्ञान लेते हुये घायलों के समुचित उपचार के निर्देश दिये हैं। श्री योगी ने बागपत में हुए हादसे का संज्ञान लिया और घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाकर जिला प्रशासन के अधिकारियों को उनके समुचित उपचार के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी कामना की है। गौरतलब है कि बागपत के बड़ौत कस्बे में भगवान आदिनाथ के निर्वाण लड्डू चढ़ाने को बनाये गये लकड़ी व बांस के पैड के टूट कर गिरने से कई श्रद्धालु घायल हो गये थे। मौके पर जिला और पुलिस प्रशासन की देखरेख में राहत एवं बचाव का कार्य जारी है।उत्तर प्रदेश में बागपत के बड़ौत कस्बे में भगवान आदिनाथ के निर्वाण लड्डू चढ़ाने को बनाये गये लकड़ी व बांस के पैड के टूट कर गिरने से कई श्रद्धालु हताहत हो गये। पुलिस सूत्रों ने बताया कि बड़ौत के गांधी रोड पर जैन कालेज परिसर में बने मानस्तम्भ पर भगवान आदिनाथ का निर्माण लड्डू चढ़ाने के लिए लकड़ी व बांस का सीढ़ीनुमा पैड बनाया गया था। मंगलवार सुबह जैन श्रद्धालु निर्माण लड्डू चढ़ाने के लिए मान स्तंभ पर पहुंचे। बताया गया कि लकड़ी के पैड पर जैन श्रद्धालुओ की भीड़ चढ़ गई जिससे वह सीढ़ी टूट कर नीचे गिर गई। सीढ़ी पर चढ़ रहे सैकड़ो की संख्या में जैन श्रद्धालु नीचे गिर गए जिसमें एक दूसरे के नीचे दबकर करीब सैकड़ो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना मिलते ही जिलाधिकारी अस्मिता लाल व पुलिस अधीक्षक अर्पित विजय वर्गीय भी मय फोर्स के घटनास्थल पर पहुंचे और घटना की जानकारी ली। घायलों को तुरंत नगर व जनपद के विभिन्न अस्पतालों में पहुंचाया जा रहा है।

पीएम मोदी ने भारत में लाइव कॉन्सर्ट की सफलता को लेकर कही खास बात

भारत की आकांक्षा हमारी ताकत

● कच्चे माल का निर्यात मंजूर नहीं, देश में ही चीजें बनें, इसके लिए इकोसिस्टम बदल रहे, पीएम मोदी बोले

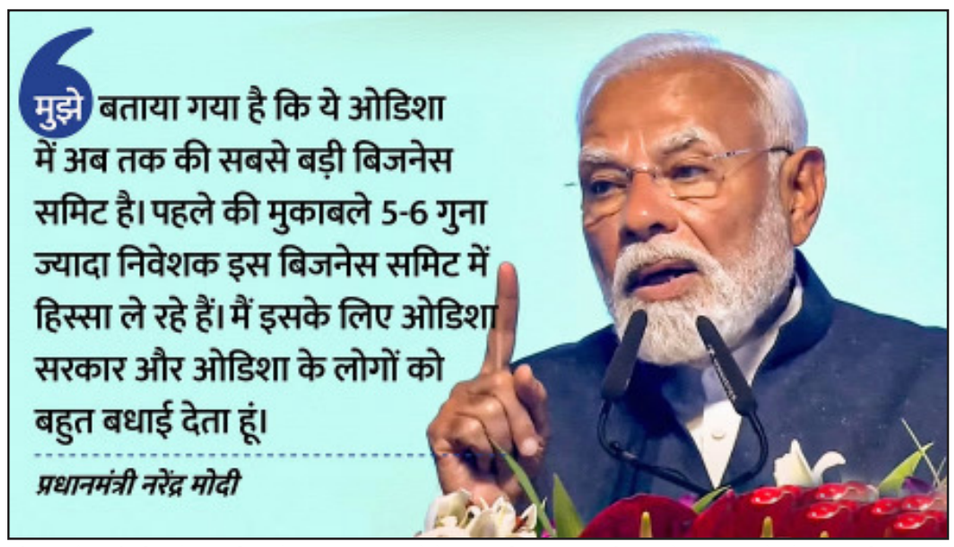

भुवनेश्वर,(एजेंसी)। उद्घाटन समारोह में वेदांता समूह के चेयरमैन अनिल अग्रवाल, आदित्य बिड़ला समूह के चेयरमैन कुमार मंगलम बिड़ला और जिंदल स्टील एंड पावर के चेयरमैन नवीन जिंदल मौजूद थे। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव भी कार्यक्रम में शामिल हुए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को भुवनेश्वर में 'उत्कर्ष ओडिशा, मेक इन ओडिशा कॉन्क्लेव' का उद्घाटन किया। उन्होंने जनता मैदान में मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी और राज्यपाल हरि बाबू कंभमपति की मौजूदगी में व्यापार शिखर सम्मेलन का उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री ने 'मेक इन ओडिशा' प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया, जिसमें जीवंत औद्योगिक परिवेश विकसित करने में राज्य की उपलब्धियों को दिखाया गया है। दो दिवसीय इस सम्मेलन में बड़े उद्योगपतियों सहित करीब 7,500 कारोबारी प्रतिनिधियों के हिस्सा लेने की उम्मीद है। उद्घाटन समारोह में वेदांता समूह के चेयरमैन अनिल अग्रवाल, आदित्य बिड़ला समूह के चेयरमैन कुमार मंगलम बिड़ला और जिंदल स्टील एंड पावर के चेयरमैन नवीन जिंदल मौजूद थे। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव भी कार्यक्रम में शामिल हुए। सम्मेलन उद्योग जगत की हस्तियों, निवेशकों और नीति निर्माताओं के लिए एक पसंदीदा निवेश गंतव्य के रूप में ओडिशा द्वारा प्रदान किए जाने वाले अवसरों पर चर्चा करने के लिए एक मंच के रूप में काम करेगा। इस दौरान पीएम मोदी ने सम्मेलन को संबोधित भी किया। उन्होंने कहा, श्मुझे बताया गया है कि ये ओडिशा में अब तक की सबसे बड़ी बिजनेस समिट है। पहले की मुकाबले 5–6 गुणा ज्यादा निवेशक इस बिजनेस समिट में हिस्सा ले रहे हैं। मैं इसके लिए ओडिशा सरकार और ओडिशा के लोगों को बहुत बधाई देता हूं।श भारत की अर्थव्यवस्था के दो बड़े स्तंभ उन्होने कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था के दो बड़े स्तंभ हैं। हमारा इनोवेटिव सर्विस सेक्टर और भारत के क्वालिटी प्रोडक्ट्स. .. देश की तेज प्रगति केवल कच्चा माल के निर्यात से संभव नहीं है। इसलिए हम पूरे इको सिस्टम को बदल रहे हैं। नए विजन के साथ काम कर रहे हैं। सरकार के प्रयासों के बीच मेरा आपसे कुछ आग्रह भी है। तेजी से बदलती दुनिया में आप ग्लोबल सप्लाई चेन से जुड़ी चुनौतियों को देख रहे हैं।

वायनाड में बाघ का शिकार हुई महिला के घर पहुंचीं प्रियंका गांधी

वायनाड,(एजेंसी)। प्रियंका गांधी राधा के परिवार से मिलने के बाद कांग्रेस नेता रहे एनएम विजयन के घर भी जाएंगी। एनएम विजयन और उनके बेटे ने 27 दिसंबर 2024 को आत्महत्या कर ली थी। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी मंगलवार को केरल में अपने संसदीय क्षेत्र वायनाड के दौरे पर पहुंचीं। वायनाड में प्रियंका गांधी ने बाघ के हमले में जान गंवाने वाली महिला राधा के परिजनों से मुलाकात की और संवेदना व्यक्त की। प्रियंका गांधी कन्नूर हवाई अड्डे से सड़क मार्ग द्वारा वायनाड पहुंचीं। वायनाड पहुंचकर सबसे पहले प्रियंका गांधी राधा के घर पहुंचीं। हालांकि इस दौरान उन्हें सीपीआईएम कार्यकर्ताओं के विरोध का भी सामना करना पड़ा। महिला का शिकार करने वाले बाघ की भी हुई मौत बीती 24 जनवरी को एक बाघ ने राधा नामक महिला को मार डाला था। राधा मनंतावाड़ी गांव में स्थित प्रियदर्शिनी एस्टेट में कॉफी बीन्स लेने गई थी। उसी दौरान राधा पर बाघ ने हमला कर उसे मार डाला। सोमवार को राधा का शिकार करने वाला बाघ भी मृत पाया गया। वन अधिकारियों का कहना है कि बाघ के पेट में बाल, राधा के कपड़े और कान की बालियां मिली हैं, जिससे अंदाजा लगाया जा रहा है कि इन्हीं की वजह से बाघ की मौत हुई। प्रियंका गांधी राधा के परिवार से मिलने के बाद कांग्रेस नेता रहे एनएम विजयन के घर भी जाएंगी। एनएम विजयन और उनके बेटे ने 27 दिसंबर 2024 को आत्महत्या कर ली थी।

महाकुंभ में मौनी अमावस्या से पहले उमड़े श्रद्धालु

● अब तक 15 करोड़ ने लगाई डुबकी
● मीलों का रास्ता और करोड़ों की भीड़, आपकी कुंभ यात्रा में अयोध्या–काशी भी तो पढ़ें ये रिपोर्ट

महाकुंभ,(एजेंसी)। कभी न खत्म होने वाली आस्था और उसके साथ वैसा ही महसूस कराती कभी न खत्म होने वाली भीड़। हर कोई यही जानना चाह रहा है कि महाकुंभ के लिए कब जाना सही होगा? कहां से जाना सही होगा? कहां पर रुकना सही होगा? इतना ही नहीं त्रिवेणी में स्नान करने के बाद लोग अयोध्या और काशी की ओर जा रहे हैं, जिससे इन दो शहरों पर भी भीड़ का काफी दवाब नजर आ रहा है। आप भी अगर महाकुंभ में स्नान के बाद काशी या अयोध्या जाना चाह रहे हैं तो अभी थोड़ा रुकना एक बेहतर विकल्प हो सकता है। महाकुंभ में उमड़े श्रद्धा के सैलाब का दबाव अब काशी और अयोध्या की गलियां भी महसूस कर रही हैं। अयोध्या की बात की जाए तो मंगलवार को भी श्रद्धालुओं का रेला उमड़ा है। मंगलवार होने के चलते हनुमानगढ़ी में दो किलोमीटर लंबी लाइन लगी हुई है। कुछ इसी तरह का दृश्य राम जन्मभूमि मंदिर की ओर जाने वाली गलियों का भी है। सोमवार को रामलला के दरबार में 3.55 लाख भक्तों ने हाजिरी लगाई। दो दिनों के भीतर रामलला के दरबार में छह लाख से अधिक भक्त पहुंच चुके हैं। 29 जनवरी को मौनी अमावस्या का मुख्य महापर्व है। अमावस्या आज देर शाम से ही लग रही है पर उदया तिथि में यह स्नान 29 को भोर से पूरे दिन चलेगा। इसके लिए भक्तों का रेला है। इस बीच मंगलवार सुबह से ही 10 लाख से ज्यादा भक्त सरयू स्नान कर नागेश्वरनाथ महादेव का अभिषेक करने के बाद हनुमानगढ़ी दर्शन के लिए पहुंचे रहे हैं। प्रयागराज से अयोध्या पहुंचने के लिए आपको 180 किलो मीटर का सफर तय करना पड़ेगा। भीड़ बहुत अधिक होने के कारण आप कब स्टेशन पहुंचगे और कब अयोध्या, इसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल है। काशी का तो ऐसा हाल भगवान विश्वनाथ को भी नहीं मिल रहा सोने का वक्त महाकुंभ की भीड़ से काशी हाउसफुल हो गया है। बाबा के दर्शन के लिए घंटों लोग लाइन में खड़े होकर इंतजार कर रहे। वहीं सोमवार को एक दिन में 11 लाख भक्त बाबा के धाम में पहुंचे। सामान्य दिनों में पहली बार रात एक बजे तक विश्वनाथ मंदिर को खोला गया। इससे पहले महाशिवरात्रि और सावन के महीने में देर रात तक मंदिर खुलता था। भीड़ को देखते हुए लगातार 22 घंटे तक दर्शन के लिए मंदिर को खुला रखा गया। रात 2रू15 बजे मंदिर फिर से खुला। 22 घंटे लगातार भक्तों ने दर्शन–पूजन किया। भोर में 2रू45 बजे मंगला आरती शुरू हुई। मंगला आरती के बाद दर्शन पूजन का सिलसिला फिर शुरू हो गया। मंगलवार को भी देर रात तक दर्शन कराए जाएंगे। इससे पहले सोमवार को दोपहर में दशाश्वमेध घाट से गोदौलिया रूट को पूरी तरह से बंद कर दिया गया था।

देश का खजाना चंद अरबपतियों पर लुटाया जा रहा: केजरीवाल

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने केंद्र सरकार पर देश का खजाना चंद अरबपति दोस्तों पर लुटाने का आरोप लगाया है। श्री केजरीवाल ने मंगलवार को संवाददाता सम्मेलन कर कहा कि उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अहम मुद्दे पर आज एक चिट्ठी लिखी है, जिसमें उन्होंने बताया है कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जो केंद्र सरकार है, वह देश के चंद अरबपति दोस्तों पर सारा खजाना लुटा रही है। उन्होंने कहा कि पहले अपने अरबपति दोस्तों को कर्ज देते हैं, फिर माफ कर देते हैं। अभी तक करीब 500 अरबपति दोस्तों के 10 लाख करोड़ कर्ज माफ कर दिए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार को कर्ज माफ करना है तो मध्यम वर्ग और किसान का माफ करे। मध्यम वर्ग साल में 12 लाख रुपये कमाता है और उसकी आधी कमाई अलग अलग प्रकार के टैक्स भरने में चला जाता है और बदले में उसे कुछ नहीं मिलता है। उन्होंने किसी भी अरबपति के कर्ज को माफ ना करने की माँग की है। उन्होंने कहा, "मैंने हिसाब लगाया है, अगर अमीरों का लोन माफ न किया जाए तो टैक्स की दरें आधी हो जाएंगी। जीएसटी आधी हो सकती है और खाने के समान पर लगने वाली जीएसटी को भी माफ किया जा सकता है।"

श्रीलंकाई नौसेना ने भारतीय मछुआरों पर बरसाईं गोलियां

● पड़ोसी देश के कार्यवाहक राजदूत तलब

नई दिल्ली,(एजेंसी)। मंत्रालय ने बताया कि डेल्फ्ट द्वीप के पास श्रीलंकाई नौसेना की फायरिंग में दो भारतीय मछुआरे गंभीर रूप से घायल हुए हैं। गंभीर रूप से घायल भारतीय मछुआरों का जाफना अस्पताल में इलाज चल रहा है। श्रीलंका के कार्यवाहक राजदूत को विदेश मंत्रालय में तलब कर कड़ा विरोध दर्ज कराया गया है। भारत ने भारतीय मछुआरों के मुद्दे पर श्रीलंका के सामने नाराजगी जताई है। विदेश मंत्रालय के मुताबिक, श्रीलंकाई नौसेना की ओर से भारतीय मछुआरों को पकड़ने के लिए की गई गोलीबारी पर कोलंबो के सामने कड़ा विरोध दर्ज कराया गया है। मंत्रालय ने बताया कि डेल्फ्ट द्वीप के पास श्रीलंकाई नौसेना की फायरिंग में दो भारतीय मछुआरे गंभीर रूप से घायल हुए हैं। गंभीर रूप से घायल भारतीय मछुआरों का जाफना अस्पताल में इलाज चल रहा है। श्रीलंका के कार्यवाहक राजदूत को विदेश मंत्रालय में तलब कर कड़ा विरोध दर्ज कराया गया है। विदेश मंत्रालय ने बयान जारी कर कहा, श आज सुबह डेल्फ्ट द्वीप के नजदीक 13 भारतीय मछुआरों को पकड़ने के दौरान श्रीलंकाई नौसेना की ओर से गोलीबारी की घटना की सूचना मिली। मछली पकड़ने वाली नाव पर सवार 13 मछुआरों में से दो गंभीर रूप से घायल हो गए हैंऔर उनका इलाज जाफना टीचिंग अस्पताल में चल रहा है। तीन अन्य मछुआरों को मामूली चोटें आई हैं। उनका भी इलाज किया जा रहा है। जाफना में भारतीय वाणिज्य दूतावास के अधिकारियों ने घायल मछुआरों से अस्पताल में मुलाकात की और उनका हालचाल जाना। उन्होंने मछुआरों और उनके परिवारों को हर संभव सहायता प्रदान की है। बयान में आगे कहा गया, श्नई दिल्ली में श्रीलंका के कार्यवाहक उच्चायुक्त को आज सुबह विदेश मंत्रालय में बुलाया गया और इस घटना पर कड़ा विरोध दर्ज कराया गया। कोलंबो में हमारे उच्चायोग ने भी इस मामले को श्रीलंका सरकार के विदेश मंत्रालय के समक्ष उठाया है।

भारत सरकार ने हमेशा मछुआरों से जुड़े मुद्दों को मानवीय और मानवीय तरीके से निपटाने की आवश्यकता पर जोर दिया है। इसमें आजीविका संबंधी चिंताओं को भी ध्यान में रखा गया है।

दिल्ली दंगे के आरोपी ताहिर हुसैन को राहत, सुप्रीम कोर्ट ने दी कस्टडी पैरोल

नई दिल्ली,(एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने ताहिर हुसैन को 29 जनवरी से 3 फरवरी तक कस्टडी पैरोल दी है। इस दौरान उनकी हिरासत पर जो भी खर्च होगा, उसे ताहिर हुसैन को ही वहन करना होगा। इसमें दिल्ली पुलिस के कर्मचारियों का खर्च, जेल वाहन और एस्कॉर्ट वाहन का खर्च भी शामिल है। साल 2020 में दिल्ली में हुए दंगों के आरोपी और पूर्व पार्षद ताहिर हुसैन को सुप्रीम कोर्ट ने राहत देते हुए कस्टडी पैरोल की मंजूरी दे दी है। इसके बाद ताहिर हुसैन को पुलिस हिरासत में चुनाव प्रचार करने की छूट मिल गई है। ताहिर हुसैन दिल्ली की मुस्तफाबाद सीट से एआईएमआईएम पार्टी के टिकट पर विधानसभा चुनाव लड़ रहे हैं। ताहिर हुसैन ने पूर्व में सुप्रीम कोर्ट में चुनाव प्रचार के लिए जमानत देने की याचिका दायर की थी, लेकिन इसकी मंजूरी नहीं मिल पाई थी। अब उन्होंने पुलिस हिरासत में ही चुनाव प्रचार करने देने की इजाजत सुप्रीम कोर्ट से मांगी थी। जिसे सुप्रीम कोर्ट ने मंजूर कर लिया है। सुप्रीम कोर्ट ने लगाईं ये शर्तें सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने दोपहर दो बजे दिए अपने आदेश में ताहिर हुसैन को कस्टडी पैरोल देने का आदेश दिया। सुप्रीम कोर्ट ने ताहिर हुसैन को 29 जनवरी से 3 फरवरी तक कस्टडी पैरोल दी है। इस दौरान उनकी हिरासत पर जो भी खर्च होगा, उसे ताहिर हुसैन को ही वहन करना होगा। इसमें दिल्ली पुलिस के कर्मचारियों का खर्च, जेल वाहन और एस्कॉर्ट वाहन का खर्च भी शामिल है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के तहत ताहिर हुसैन सिर्फ दिन में जेल से बाहर जाकर चुनाव प्रचार करने की इजाजत मिलेगी और हर रात को उन्हें जेल वापस जाना होगा। उन्हें हर दिन 12 घंटे की जमानत के लिए 2.47 लाख रुपये देने होंगे, जो कि उनकी सुरक्षा पर होने वाले खर्च का हिस्सा होगा। उल्लेखनीय है कि ताहिर हुसैन के खिलाफ कई मामले चल रहे हैं। उन्होंने पूर्व में भी चुनाव प्रचार के लिए जमानत देने की मांग की थी।, लेकिन उस याचिका पर सुप्रीम कोर्ट की दो जजों की पीठ ने अलग–अलग आदेश दिया। जिसके बाद याचिका को बड़ी पीठ के पास भेजा गया।

कांग्रेस अध्यक्ष के खिलाफ परिवाद दर्ज

● महाकुंभ में स्नान को लेकर दिया था बयान

मुजफ्फरपुर,(एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के कथित विवादित बयान को लेकर बिहार में उनके खिलाफ परिवाद दायर किया गया है। मामले की सुनवाई तीन फरवरी को होगी। पढ़ें पूरी खबर... कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के खिलाफ मुजफरपुर कोर्ट में एक परिवाद दर्ज किया गया है। यह मामला वरिष्ठ कांग्रेस नेता खरगे द्वारा कुंभ स्नान को लेकर मध्य प्रदेश में दिए गए एक कथित विवादित बयान से जुड़ा है। अधिवक्ता सुधीर ओझा ने दर्ज कराया परिवाद यह परिवाद स्थानीय अधिवक्ता सुधीर ओझा द्वारा दर्ज कराया गया है। अधिवक्ता ओझा ने खरगे पर धार्मिक भावनाओं को आहत करने का आरोप लगाया है। परिवाद में कहा गया है कि मल्लिकार्जुन खरगे के बयान से हिंदू धर्मावलंबियों की आस्था को ठेस पहुंची है। इस मामले की सुनवाई मुजफ्फरपुर कोर्ट में चल रही है। अदालत ने अगली सुनवाई की तिथि 3 फरवरी 2025 निर्धारित की है। मामले का कानूनी पहलू अधिवक्ता सुधीर ओझा का दावा है कि खरगे के बयान ने न केवल धार्मिक भावनाओं को आहत किया है, बल्कि समाज में धार्मिक असंतुलन पैदा करने का प्रयास भी किया है। अदालत में दर्ज परिवाद में भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की विभिन्न धाराओं का उल्लेख किया गया है, जिनमें धार्मिक भावनाएं आहत करने और सार्वजनिक शांति भंग करने के आरोप शामिल हैं। खरगे की प्रतिक्रिया का इंतजार अब तक मल्लिकार्जुन खरगे या कांग्रेस पार्टी की ओर से इस परिवाद पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। मामले पर सभी की नजरें अदालत की आगामी सुनवाई पर टिकी हैं। विवादित बयान बना मामला दरअसल, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने सोमवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाने पर सवाल उठाते हुए पूछा कि क्या गंगा में स्नान करने से गरीबी खत्म हो जाएगी। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा नेता कैमरों के लिए डुबकी लगाने की होड़ में जुटे हैं। महू में श्जय बापू, जय भीम, जय संविधानश रैली को संबोधित करते हुए खरगे ने कहा कि भाजपा नेता तब तक डुबकी लगाते हैं जब तक यह कैमरों में अच्छा दिखे। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि वह किसी की आस्था पर सवाल नहीं उठा रहे हैं और अगर उनके बयान से किसी को ठेस पहुंची हो, तो वह माफी मांगते हैं। खरगे ने कहा कि मोदी के झूठे वादों के झांसे में न आएं। क्या गंगा में डुबकी लगाने से गरीबी खत्म होती है? क्या इससे आपका पेट भरता है? मैं किसी की आस्था पर सवाल नहीं उठाना चाहता। अगर किसी को बुरा लगा हो, तो मैं माफी मांगता हूं। उन्होंने आगे कहा कि जब बच्चे भूख से मर रहे हैं, स्कूल नहीं जा रहे हैं, मजदूरों को उनकी मजदूरी नहीं मिल रही है, तब ये लोग हजारों रुपये खर्च कर गंगा में डुबकी लगाने की प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

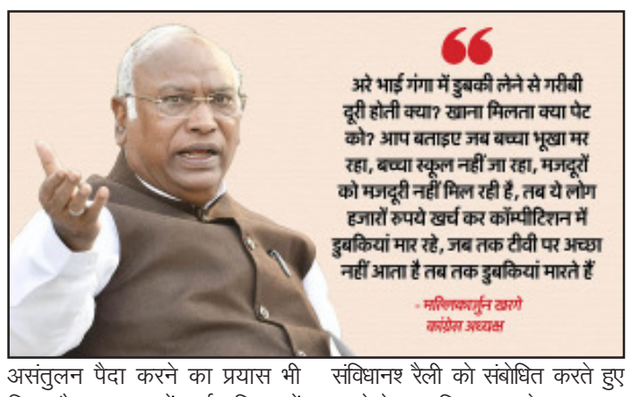

सम्पादकीय

नश्वर्थ कोरिया ने फिर किया मिसाइल परीक्षण

अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप के दूसरी बार राष्ट्रपति पद की ताजपोषी के साथ–साथ डोनाल्ड ट्रंप द्वारा रूस यूक्रेन युद्ध के युद्ध विराम की धमकी भरी अपील ने रूस,चीन तथा नॉर्थ कोरिया को बेचौन कर दिया है। उल्लेखनीय की नॉर्थ कोरिया और साउथ कोरिया के आपस के कड़वे रिश्ते के बीच अमेरिका का साउथ कोरिया को लेकर काफी हस्तक्षेप है जिसे नॉर्थ कोरिया कई दशक से पसंद नहीं करता आया है ।संयुक्त राष्ट्र संघ और एमनेस्टी इंटरनेशनल की भूमिका बेमानी हो गई हैं। क्या मानवीय संवेदनाओं की आशाएं निर्मूल साबित हो रही हैं। वैश्विक शांति और अमन की कल्पनाओं से परे वैश्विक युद्ध की आशंका में उत्तर कोरिया ने भी अपना मोर्चा खोल दिया है उसने फिर एक मिसाइल का परीक्षण कर साउथ कोरिया अमेरिका तथा यूरोपीय देशों को सीधा–सीधा संदेश दिया है कि साउथ कोरिया और नॉर्थ कोरिया के संबंधों के बीच किसी देश के हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उत्तर कोरिया की आधिकारिक न्यूज एजेंसी कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी के अनुसार दक्षिण कोरिया और उत्तर कोरिया के बीच अब तनाव बढ़ने लगा है। उत्तर कोरिया में दक्षिण कोरिया के सामरिक एवं महत्वपूर्ण ड्रोन का उत्तर कोरिया के हवाई क्षेत्र में सर्वे करने के दौरान उत्तर कोरिया ने इसे चिन्हित कर अपनी संप्रभुता की सीमाओं पर हमला करार किया है और स्पष्ट रूप से कह दिया है कि यदि दक्षिण कोरिया अपने ड्रोन इसी तरह उत्तर कोरिया की सीमा पर भेजेगा तो उत्तर कोरिया इसे अपने पर हमला मानेगा और इसका मुंह तोड़ जवाब देने के लिए उत्तर कोरिया तैयार है ।उत्तर कोरिया ने दक्षिण कोरिया पर बड़े हमले की चेतावनी भी दे डाली है। इन परिस्थितियों में विश्व में चल रहे रूस यूक्रेन युद्ध तथा इसराइल हमास लेबनान ईरान युद्ध के अलावा उत्तर कोरिया ने हमले की धमकी देकर एक नये युद्ध का मोर्चा खोल दिया हैस यह तो सर्व विदित है कि उत्तर कोरिया का तानाशाह किम जोंग–उन एक सनकी तानाशाह है और अमेरिका पर परमाणु युद्ध के हमले की गाहे–बगाहे धमकियां भी दिया करता हैस उत्तर कोरिया दक्षिण कोरिया की किसी भी हिमाकत पर उस पर हमला कर सकता हैस उधर रूस यूक्रेन युद्ध को 2 वर्ष पूरे हो चुके है कई प्रभावशाली प्रयासों के बाद भी युद्ध रुकने का नाम नहीं ले रहा है रूस के व्लादिमीर पुतिन और यूक्रेन के व्लादिमीर जेलेन्स्की हास्य कलाकार होने के बावजूद यूक्रेन के लिए त्रासदी के नायक बन गए हैं। दोनों देशों में हजारों नागरिक एवं सैनिक मारे जा चुके हैं इसके अलावा अरबों डॉलर की संपत्ति का भारी नुकसान भी हुआ है । इसराइल हमास लेबनान तथा ईरान के मध्य युद्ध अपने पूरे शबाब पर हैस इजरायल के आतंकवादी समूह हिज्बुल्लाह के कमांडर याह्या सिंनवार को रॉकेट लांचर से मार देने के बाद इसके जवाब में लेबनान से इजरायल के सिरोसिया शहर में जहां इसराइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू का आधिकारिक निवास है में लगभग 55 रॉकेट लांचर दागे थे इसराइल के प्रधानमंत्री और उनकी पत्नी सारा घर से बाहर होने के कारण पूरी तरह सुरक्षित हैं। ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्लाह अली खामनेई ने अपने बयान में बताया की इस तरह के और हमले अभी जारी रहेंगे। पूरा विश्व इस समय विश्व युद्ध की कगार पर है और यदि उत्तर तथा दक्षिण कोरिया के मध्य युद्ध होता है तो निश्चित तौर पर अमेरिका साउथ कोरिया की तरफ से एवं रूस,चीन नॉर्थ कोरिया की तरफ से इस युद्ध में शामिल हो सकते हैं। पूरा विश्व दो भागों में बट गया है एक तरफ रूस,चीन, नॉर्थ कोरिया, पाकिस्तान तथा पश्चिम एशिया के देश होंगे तथा दूसरी तरफ अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, कनाडा, इजरायल तथा अन्य देश के युद्ध में शामिल होने की संभावना बलवती हो रही हैस भारत लगातार रूस–यूक्रेन, इसराइल–हमास युद्ध को रोकने के लिए प्रयासरत है और इस प्रयास के अंतर्गत भारत के प्रधानमंत्री ने रूस तथा यूक्रेन की आधिकारिक यात्राएं भी की है। परंतु दोनों देशों के राष्ट्रपतियों के अडियल रवैये के कारण शांति वार्ता संभव नहीं हो पाई, परंतु जैसा पुतिन ने अपने वक्तव्य में बताया की रूस यूक्रेन के साथ युद्ध विराम शांतिपूर्वक तरीके से करना चाहता है।

जनवरी में दीपावली मनाता जनजातीय ग्राम मेंढापानी

❍ वैसे तो देश भर में जनजातीय समाज का दीपावली उत्सव बड़ा ही विशिष्ट व उल्लेखनीय होता है किंतु गोंडवाना के जनजातीय समाज की दीपावली का तो कहना ही क्या!! इनके जीवन में दीपावली व होली का त्यौहार केवल आता नहीं है, आकर ठहर जाता है!

प्रवीण गुगनानी

भारतीय पशुधन प्रेम अद्भुत कथा है यह! सौ प्रतिशत जनजातीय एवं अनुसूचित जाति की जनसंख्या वाले मेंढापानी ग्राम (बैतूल) की यह कथा अविश्वसनीय भी है! अविश्वनीय इसलिए, कि अपने देश के जनजातीय बंधु, अपने होली–दीपावली के पर्वों से किसी प्रकार का समझौता नहीं करते। वे अपने इन उत्सवों को डूबकर, रसमय होकर मनाते हैं और इन त्योहारों को जीते हैं। ये जनजातीय त्यौहारों को स्वयं में समाहित कर लेते हैं।

वैसे तो देश भर में जनजातीय समाज का दीपावली उत्सव बड़ा ही विशिष्ट व उल्लेखनीय होता है किंतु गोंडवाना के जनजातीय समाज की दीपावली का तो कहना ही क्या!! इनके जीवन में दीपावली व होली का त्यौहार केवल आता नहीं है, आकर ठहर जाता है! इनके चौक, चौपालों, खारी, ढानी, बाजारों, टोलों, टपरों, मठ, मुठिया, मेलों, ग्रामों में और, उससे भी बढ़कर इनके हृदय में दीपावली ठहर जाती है! हाँ, ये वनवासी बंधु, त्योहारों को हृदय में धारते हैं और उसे उतार लेते हैं अपने अन्तर्तम तक। होली, दीवाली को मनस्थ और तनस्थ कर लेने का ही प्रभाव होता है कि बैतूल जिले का जनजातीय समाज एक मास तक इन त्योहारों को सतत मनाता ही रहता है। इस मध्य वह कोई काम नहीं करना चाहता। इस मध्य उसे आप कितनी भी अधिक मजदूरी का, वेतन का लालच दे दोय वह नहीं आयेगा काम पर! इनकी होली, दीवाली केवल अपने ही परिवार में, मोहल्ले में या ग्राम में नहीं मनती है। ये जनजातीय बंधु, उस क्षेत्र में स्थित प्रत्येक ग्राम में एक दूसरे के गाँव में जाकर घर में रात्रि विश्राम करके ही दीवाली मनाते हैं। सभी एक दूसरे के गाँव में जाते हैं और भव्य आतिथ्य का आनंद लेते हैं।

तो आते हैं, बैतूल जिले के एक विशुद्ध जनजातीय व अनुसूचित जाति वाले गाँव, मेंढापानी की कहानी पर। मेंढापानी में लगभग तीन सौ पचास घर हैं, सभी घर या तो जनजातीय बंधुओं के हैं या अनुसूचित जाति बंधुओं के। दोनों की जीवन शैली लगभग वनवासी ही है। लगभग तीन वर्ष पूर्व कोविड महामारी के दिनों के आसपास ही भारत के कुछ प्रदेशों में पशुधन को लंपी वायरस नामक एक बीमारी ने घेर लिया था। बैतूल में भी एक सौ चौबीस ग्रामों में यह बीमारी फेल गई थी। हजारों गाय, बैल, भैंसों को लंपी वायरस ने अपना शिकार बना लिया था। इन्हीं दिनों में मेंढापनी में भी सैकड़ों गाय, बेल, भैंस आदि पशु लंपी से ग्रसित होकर गोलोकवासी हो गए थे। वह दीपावली के एन पूर्व का सितंबर का माह थाय वर्ष था, 2022! मेंढापानी के निवासी अपने प्रिय पशुधन के असमय व बड़ी संख्या में निधन से इतने दुखी हुए कि इन्होंने अपने सबसे बड़े, सबसे प्रिय, सबसे सुंदर त्यौहार दीपावली को ही त्याग दिया। जब आसपास के ग्रामवासियों को यह बात पता चली तो पंचायत बैठी और पंचायत ने, शोकग्रस्त मेंढापानी वासियों से दीपावली मनाने का आग्रह किया। तब तक जनवरी, 2023 आ चुका था। इस प्रकार, अक्टूबर–नवंबर की दीपावली मेंढापानी में पहली बार जनवरी में मनाई गई। लंपी वायरस के विदा होने पर ही जनवरी, 2023 में मेंढापनी निवासियों ने दीपावली मनाई थी। अपने दिवंगत पशुधन के प्रति मेंढापानी के ग्रामीण बंधुओं का शोक यहाँ भी रुका नहीं, उन्होंने तीन वर्षों तक उनका प्रियतम दीपावली का पर्व जनवरी में मनाने का निर्णय लिया। अपने दिवंगत पशुधन के प्रति शोक प्रकट करने का उनका यह अपना तरीका था।

यह अंतिम वर्ष था जब मेंढापानी निवासियों ने दीपावली का पर्व कार्तिक मास में न मनाकर, जनवरी में मनाया था। इस वर्ष मेंढापानी के ग्रामवासियों के आग्रह पर उनकी इस जनवरी माह वाली दीपावली में सम्मिलित होने का अवसर मुझे भी मिला। आड़ा–टेढ़ा, जैसा भी सही पर इन वनवासी बंधुओं के साथ नृत्य करने में मुझे भी बड़ा आनंद आया। मेंढापानी के निवासियों संग चाय पर चर्चा भी हुई और उनके संग सहभोज का भागी भी बना! बड़ा ही अद्भुत, उमंग, उल्लास व उत्साह से भरा वातावरण था समूचे गाँव का। भले ही छोटे–छोटे घर–आँगन होंगे मेंढापानी के निवासियों के, किंतु उनके दिल के जैसे ही, घर में भी लोग समाते ही चले जा रहे थे। एक–एक घर में तीस–तीस चालीस–चालीस मेहमान थे। प्रत्येक घर के सामने आठ–दस बाइक्स तो अनिवार्य रूप से खड़ी ही थी। किसी भी मोटरसाइकिल पर तीन से कम लोग तो आए ही नहीं थे। फटफटी पर चार लोगों को बैठा लेना तो इन ग्रामीणों के लिए बड़ी ही सामान्य सी बात है। पूरा गांव मेले के वातावरण में, गीत, संगीत, नृत्य, चाय–पानी, भोजन के क्रम में डूबा हुआ सा और सराबोर सा झूम रहा था। बस एक कमी खल रही थी कि यहाँ वहाँ ऊँचे स्वर में बजने वाले संगीत में उनके अपने जनजातीय गीत और नृत्य गायब थे। फिल्मी गीतों और डीजे के शोर ने पारंपरिक गीतों व नृत्य के स्वरों को दबा दिया था। यह दुखद लगा। शेष सभी कुछ बड़ा ही आनंदित कर देने वाला था! युवक युवतियां तो अपनी झूम में थे ही, बड़े और वृद्ध भी अपने पूरे रंग में दिख रहे थे। सभी ने एक से एक रंग बिरंगे, चटकीले रंगों वाले कपड़े पहने हुए थे। युवक–युवतियों के माथे पर डिस्को इलेक्ट्रानिक बल्बों से जलने वाले बकल झिलमिला रहे थे। इन रंगीन लाइटिंग में उनके चेहरे के साज सिंगार को और अधिक चमक और उत्साह मिल रहा था। युवक–युवतियाँ संग–संग हाथों में हाथ थामे घूम रहे थे, नाच रहे थे। निश्चित ही मेंढापानी में इस मेले के दिन पच्चीस–पचास रिश्ते तो तय हुए ही होंगे। मुझे अपने मध्य पाकर ग्रामवासी बड़े ही प्रसन्न हुए, उन्होंने बड़े ही हृदय से स्वागत किया। मैंने भी अवसर छोड़ा नहीं और बहुतेरी बातें की। उनसे आग्रह किया कि अगले वर्ष दीपावली कार्तिक मास में ही मनाएँ और फिल्मी गानों और डीजे के स्थान पर पारंपरिक गीत व नृत्य को ही थामें रहें। गौवंश के प्रतु, पशुधन के प्रति, इन भोले भाले ग्रामीणों का प्रेम और श्रद्धा यूँ ही बनी रहे, यही कामना...

आखिर कौन लागू करवाएगा दक्षिण चीन सागर क्षेत्र में आचार संहिता?

कमलेश पांडे

दक्षिण चीन सागर क्षेत्र में चीनी दबदबे को नियंत्रित करने के लिए एक आदर्श आचार संहिता लागू करने की मांग सही है, लेकिन वहां पर इसे लागू कौन करवाएगा, इस बात का उत्तर भारत समेत विभिन्न आसियान देशों के पास नहीं है। ये तो सिर्फ वकालत कर रहे हैं कि दक्षिण चीन सागर ऐसा होना चाहिए। जबकि चीन अपनी हठधर्मिता के चलते सैन्य कार्रवाई करने पर उतारू है। इसी दृष्टि से वह लगातार अपनी तैयारी पुख्ता करता जा रहा है। लेकिन उसे रोकने में संयुक्त राष्ट्र संघ भी यहां असहाय प्रतीत हो रहा है। देखा जाए तो चाहे चीन विरोधी अमेरिका हो या चीन समर्थक रूस या फिर इनके–इनके समर्थक विभिन्न विकसित और विकासशील देश, सबकी नीति इस मामले में अभी तक ढुलमुल ही रही है। इसलिए भारत की भूमिका इस मामले में भी अहम और निर्णायक बताई जा रही है। क्योंकि भारत और दक्षिण–पूर्व एशिया के विभिन्न देशों के बहुत पुराने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध भी हैं। वहीं, वैश्विक दुनियादारी में चीन को संतुलित रखने के लिए भी भारत और आसियान देशों को एक–दूसरे की जरूरत है। इसलिए आशियान देशों के साथ भारत की निकटता जगजाहिर है।

समझा जाता है कि भारत ही अमेरिका और रूस दोनों देशों पर दबाव डालकर आसियान देशों के दक्षिण चीन सागर सम्बन्धी दूरगामी हितों की रक्षा कर सकता है। जानकारों की मानें तो चीन की विस्तारवादी नीति से न केवल भारत बल्कि आशियान देशों के विभिन्न हित प्रभावित हो रहे हैं। उधर, जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका की चिंता भी किसी से छिपी हुई नहीं है। हालांकि, इन देशों में अमेरिका के बाद भारत ही एक ऐसा मुल्क है जो चीन की बढ़ती महत्वाकांक्षा को नियंत्रित कर सकता है। इसी नजरिए से क्वाड देशों में भी भारत की भागीदारी प्रमुख है।

इधर भारत–चीन सम्बन्धों में भी शतू डाल–डाल, मैं पात–पातश वाली कहावत चरितार्थ होती है। यही वजह है कि गत 25–26 जनवरी 2025 को भारत ने चीन के खिलाफ एक और बड़ी चाल चलते हुए, दक्षिण चीन सागर क्षेत्र में आचार संहिता लागू करने का आह्वान किया है। वहीं, इसके दूरगामी वैश्विक मायने को समझते हुए इंडोनेशिया जैसे प्रभावशाली देश ने भी भारत का साथ दिया है। उल्लेखनीय है कि इंडोनेशिया के राष्ट्रपति भारत के 76वें गणतंत्र समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए थे।

कांग्रेस की विभाजनकारी राहों से जुड़े खतरे

कांग्रेस पार्टी की नीति हमेशा से विभाजनकारी रही है। इनका एजेंडा ही रहा है देश में जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र के नाम पर बंटवारा करके अराजकता का माहौल बनाना। इसके लिये वह कभी संविधान को खतरे में बताती है तो कभी जातिगत जनगणना की मांग करती है। एक बार फिर डॉ. भीमराव आंबेडकर की जन्मस्थली महू में रैली के दौरान कांग्रेस ने जिस तरह इस पर जोर दिया कि संविधान पर हमला किया जा रहा है और महात्मा गांधी का अपमान किया जा रहा है, उससे उसकी विचारशून्यता एवं राजनीति अपरिपक्वता ही प्रकट नहीं हो रही है,, बल्कि देश को बांटने की मानसिकता भी उजागर हो रही है। यदि कांग्रेस के रणनीतिकार एवं नेता यह समझ रहे हैं कि वे संविधान के संदर्भ में भय का भूत खड़ा करने और भाजपा एवं संघ के नेताओं के बयानों को तोड़–मरोड़कर पेश करने से देश की जनता को गुमराह करने, बरगलाने में समर्थ हो जाएंगे तो ऐसा अब होने वाला नहीं है। उलटे इस क्रम में कांग्रेस की विश्वसनीयता और अधिक गिर सकती रही है और वह हास्यास्पद स्थिति का शिकार होकर अपनी राजनीतिक जमीन को कमजोर ही कर रही है। ऐसा हरियाणा, महाराष्ट्र के चुनावों में हुआ है और अब दिल्ली के विधानसभा चुनाव भी ऐसे ही होते हुए दिख रहे हैं। संविधान के खतरे में होने के कांग्रेस के दुष्प्रचार का लाभ भले ही कुछ सीमा तक लोकसभा चुनाव मिला हो, लेकिन हर बार मतदाता ऐसे नारों एवं दुष्प्रचार में गुमराह नहीं होने वाला है। वैसे भी काठ की हांडी बार–बार नहीं चढ़ती। कांग्रेस इस बात को भी तूल दे रही है कि महात्मा गांधी के साथ डॉ. आंबेडकर का अपमान किया जा रहा है। ये ऐसी बातें हैं, जिनका कोई मूल्य–महत्व नहीं। यह सब अंधेरे में तीर चलाने जैसा है। यह असत्य एवं झूठ की राजनीति है। कांग्रेस भले ही सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने की बातें कर रही हो, लेकिन सच यह है कि वह सामाजिक विभाजन की खाई को चौड़ा करते हुए देश को जोड़ने नहीं, बल्कि तोड़ने में जुटी हुई है। अब मतदाता समझदार हो चुका है, वह ऐसे झूठे प्रचार में बार–बार नहीं आने वाला है। कांग्रेस सामाजिक न्याय की बात करते हुए भाजपा के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को भी निशाने पर ले रही है, लेकिन कांग्रेस की इन कुचालों का भाजपा एवं आरएसएस करारा जबाव दे रहे हैं। गत दिवस ही संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कांग्रेस एवं उसके नेता राहुल गांधी को नसीहत देते हुए कहा– बंधुभाव ही असली धर्म है। यही बात डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने संविधान–प्रस्तुति के समय अपने भाषण में भी समझाई है। भागवत ने कहा– समाज आपसी सद्भावना के आधार पर काम करता है। इसलिए मतभेदों का सम्मान किया जाना चाहिए। प्रकृति भी हमें विविधता देती है। वे विविधता को जीवन का हिस्सा मानते हैं। उन्होंने कहा कि आपकी अपनी विशेषताएं हो सकती हैं, लेकिन आपको एक–दूसरे के प्रति अच्छा व्यवहार करना चाहिए। अगर आप जीना चाहते हैं, तो आपको एक साथ रहना चाहिए। लेकिन कांग्रेस वर्तमान में ही नहीं, बल्कि अतीत में भी विभाजनकारी नीति को बल देते हुए भारतीय इंसानों को बांटती रही है। गांधीजी ने आजादी के बाद ही यह बात समझ ली थी। इसीलिए गांधीजी ने कहा था कि कांग्रेस को खत्म कर देना चाहिए। लेकिन कांग्रेस गांधी के अनुसार तो खत्म नहीं हुई लेकिन देश में विभाजनकारी नीति के कारण जनता द्वारा नकारी जा रही है, खत्म होने के कगार पर पहुंच रही है। कांग्रेस भारत की 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' की भावना को दबा रही है, सनातन परंपरा को दबा रही है। अनेक वर्षों तक दिल्ली पर राज करने वाली कांग्रेस सत्ता में वापस आने के लिए इतनी बेचौन है कि वो हर दिन नफरत, द्वेष एवं घृणा की राजनीति कर रही है। कांग्रेस सांप्रदायिकता और जातिवाद के विष को दिल्ली चुनाव में भी उडेल रही है। हिंदू समाज को तोड़ना और उसे अपनी जीत का फॉर्मूला बनाना ही कांग्रेस की राजनीति का आधार है और यही उसको रसातल में ले जा रहा है। कांग्रेस की जातिगत जणगणना की मांग भी उसकी विभाजनकारी नीति को ही दर्शाती है। मोदी सरकार जनगणना कराने की तैयारी कर रही है। सरकार के सामने समस्या केवल यह नहीं है कि जनगणना शीघ्र कराई जाए बल्कि मूल समस्या यह है कि कांग्रेस की जाति आधारित जनगणना की मांग का सामना कैसे किया जाए। विपक्षी दल और विशेष रूप से कांग्रेस जातिगत जनगणना पर जोर दे रही है, जो केवल संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों के इरादे से की जा रही है। जातिगत जनगणना का उद्देश्य समाज को चुनावी लाभ के लिए जातियों में गोलबंद करना और जातिगत आरक्षण को तूल देकर वोटबैंक की राजनीति को धार देना है। इसकी पुष्टि विपक्षी नेताओं और विशेष रूप से राहुल गांधी के ऐसे बयानों से होती है कि अमुक–अमुक जाति के लोगों को दबाया जा रहा है। यह और कुछ नहीं, समाज को जानबूझकर बांटने की घातक चेष्टा है। यह सही है कि भारतीय समाज जातियों में विभाजित रहा है, लेकिन अब जब यह विभाजन लगातार कम होता जा रहा है, तब जाति जनगणना कराकर जाति की राजनीति करने वालों को सामाजिक विभाजन का अवसर नहीं दिया जाना चाहिए। क्योंकि यह जातीय वैमनस्य को ही हवा देगा और इससे विभाजनकारी प्रवृत्तियों के सिर उठाने का ही खतरा है। जातिगत जनगणना बेहद जटिल होने के साथ विभाजनकारी भी है। यही कारण है कि 2011 में मनमोहन सरकार ने जाति जनगणना कराने के बाद भी उसके आंकड़े सार्वजनिक करना सही नहीं समझा था। क्योंकि कई ऐसी जातियां हैं, जिनकी एक राज्य में सामाजिक और आर्थिक हैसियत दूसरे राज्य से बिल्कुल भिन्न है। इतना ही नहीं, कहीं उनकी गिनती अनुसूचित जाति में होती है तो कहीं पिछड़ी जाति में। जाति जनगणना के पीछे यह तर्क दिया जाता है कि पिछड़ेपन का एकमात्र आधार जाति है। एक समय ऐसा था, लेकिन अब हालात बदल चुके हैं। आज शहरों में किसी को इससे मतलब नहीं कि कौन किस जाति का है। जाति जनगणना कराने का मतलब होगा देश को फिर से जातीय विभाजन की ओर ले जाना। इससे बचने में ही समझदारी है। कांग्रेस एवं विपक्षी दलों का मोदी और भाजपा के विरोध के अलावा कोई साझा उद्देश्य नहीं है, उलटे उनमें दलगत हितों और महत्वाकांक्षाओं का तल्ख टकराव है।

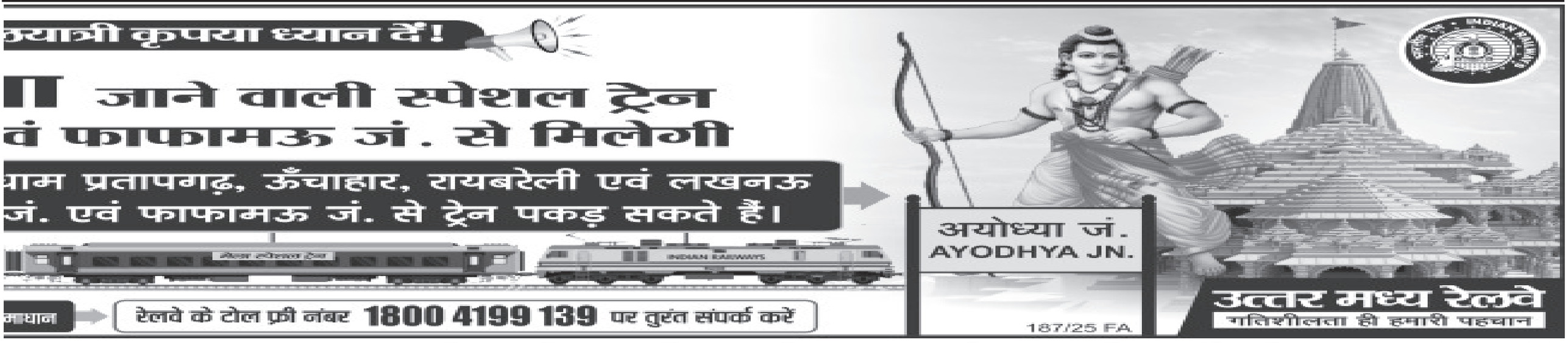

अब तक 15 करोड़ से अधिक ने लगाई डुबकी, मौनी अमावस्या से एक दिन पहले महास्नान के लिए उमड़ा रेला

महाकुंभ नगर (प्रयागराज)। महाकुंभ मेले में श्रद्धालुओं का रेला उमड़ पड़ा है। संगम जाने वाले सभी मार्ग भीड़ से पट गए हैं। मौनी अमावस्या पर स्नान करने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ इतनी बढ़ गई है कि पैदल चलने वाले भी रेंग रहे हैं। वह पैर तक पूरी तरह आगे नहीं बढ़ा पा रहे हैं। त्रिवेणी मार्ग, काली मार्ग के साथ शास्त्री ब्रिज, नाग वासुकि रोड, झूंसी रोड सभी मार्गों पर भयंकर भीड़ संगम की ओर बढ़ रही है। सुरक्षा व्यवस्था के व्यापक बंदोबस्त किए गए हैं। बड़े वाहनों को शहर के बाहर रोक दिया गया है। 13 जनवरी पौष पूर्णिमा से लेकर मौनी अमावस्या के एक दिन पहले 28 जनवरी तक 15 करोड़ श्रद्धालु संगम में डुबकी लगा चुके हैं। स्थिति यह है कि मंगलवार को दोपहर 12 बजे तक करीब एक करोड़ श्रद्धालु संगम में डुबकी लगा चुके हैं। श्रद्धालुओं की भीड़ लगातार बढ़ती जा रही है। वाराणसी से प्रयागराज आने वाले सभी प्रकार के वाहनों को अंदावां रिंग रोड के पास ही रोक दिया जा रहा है। इसी तरह कानपुर से आने वालों को नेहरू पार्क और लखनऊ, प्रतापगढ़ और गोरखपुर से आने वाले वाहनों को शांतिपुरम से पहले ही रोक दिया जा रहा है। बड़े वाहनों के साथ ही दोपहिया वाहनों को भी शहर में प्रवेश नहीं करने दिया जा रहा है। सिविल लाइंस सुभाष चौराहा, रोडवेज चौराहा के बाद मेडिकल चौराहा, सीएमपी डॉट पुल के सामने बैरिकेडिंग की गई है। मेला प्रशासन और कुंभ पुलिस ने अमृत स्नान पर्व को देखते हुए व्यापक तैयारियां की हैं। पूरे मेला क्षेत्र को नो व्हीकल जोन घोषित किया गया है। संगम तटों पर बैरिकेडिंग का कार्य तेजी से पूरा किया जा रहा है, ताकि भीड़ नियंत्रण में रहे। श्रद्धालुओं की आवाजाही के लिए हर सेक्टर और जोन में विशेष व्यवस्था की गई है। इस दौरान किसी भी तरह का प्रोटोकॉल लागू नहीं होगा। संगम नोज पर अत्यधिक भीड़ जमा न हो, इसके लिए (इंटीग्रेटेड कंट्रोल एंड कमांड सेंटर) मॉनिटरिंग करेगा। भीड़ वाले इलाकों में त्वरित कदम उठाने के लिए विशेष दल तैनात किए गए हैं। प्रमुख मार्गों पर खास निगरानी की जा रही है। साथ ही, अराजक और संदिग्ध लोगों पर भी नजर रखी जा रही है। महाकुंभ में मौनी अमावस्या स्नान को देखते हुए मंगलवार से पांच हजार अतिरिक्त बल तैनात किया जाएगा। यह पुलिस बल विभिन्न चौराहों के अलावा शहर की सीमाओं पर तैनात रहेगा। इसमें यातायात पुलिस से लेकर सिविल पुलिसकर्मी शामिल हैं। बता दें कि शहर की सीमाओं पर लगभग 10 हजार पुलिसकर्मियों की ड्यूटी लगाई गई है।

मौनी अमावस्या स्नान पर्व को लेकर बड़ी संख्या में देश–विदेश से श्रद्धालु दो दिन पहले से ही मेले में पहुंच रहे हैं। पिछले दो दिन के मुकाबले सोमवार को शाम से अचानक भीड़ बढ़ गई। भीड़ पर नियंत्रण पाने के लिए बैरिकेडिंग लगाई गई है। भीड़ इतनी ज्यादा बढ़ गई कि पुलिस असमर्थ दिखी। ऐसे में अब पुलिस लाइन में तैनात रिजर्व पुलिस की भी ड्यूटी लगा दी गई है। यातायात प्रभारी अमित कुमार ने बताया कि इनमें से एक हजार यातायात पुलिसकर्मियों की ड्यूटी मंगलवार से लगा दी जाएगी। ये पुलिसकर्मी शहर के अलावा सीमाओं पर भी श्रद्धालुओं पर नजर रखेंगे। वहीं, सिविल पुलिस के लगभग चार हजार अतिरिक्त कर्मियों को लगाया जा रहा है। ये पुलिसकर्मी मेला पुलिस के लिए आउटर कॉर्डन का काम करेंगे। रेलवे स्टेशन, बस अड्डों, एयरपोर्ट और अन्य मार्गों से आने वाले श्रद्धालुओं को सुरक्षित मेला क्षेत्र तक पहुंचाने के लिए जगह–जगह इनकी तैनाती होगी। इसके साथ ही पैरामिलिट्री फोर्स, पीएसी, बम निरोधक दस्ता और अन्य विंग की अतिरिक्त फोर्स लगाई जा रही है। मौनी अमावस्या स्नान पर्व के चार दिन पहले से ही स्नानार्थियों में उत्साह दिखने लगा। रविवार और सोमवार को तो जनसैलाब उमड़ा। प्रशासन के आंकड़ों के अनुसार इन दो दिनों में करीब तीन करोड़ लोगों ने स्नान किया। इनमें से एक करोड़ 74 लाख श्रद्धालुओं ने रविवार को स्नान किया था। वहीं, सोमवार को भी शाम छह बजे तक 1.18 लोगों ने स्नान कर लिया था। रात तक यह आंकड़ा और बढ़ सकता है। महाकुंभ में सोमवार चौथा दिन रहा जब एक दिन में एक करोड़ से ज्यादा लोगों ने स्नान किया। मकर संक्रांति के दिन तो स्नानार्थियों का आंकड़ा साढ़े तीन करोड़ पार रहा।

'पुरुषों के 13 अखाड़े तो महिलाओं के क्यों नहीं?', अब कोर्ट में आई, महिलाओं के अमृत स्नान की लड़ाई

प्रयागराज। महाकुंभ में महिला संतों के लिए अलग अमृत स्नान की लड़ाई अब इलाहाबाद हाईकोर्ट पहुंच गई है। परी अखाड़े की ओर से दायर याचिका में सवाल उठाए गए हैं कि पुरुषों के लिए 13 अखाड़े हैं तो महिलाओं के लिए क्यों नहीं? इससे पहले हाईकोर्ट के निर्देश पर ही पहली बार प्रयागराज महाकुंभ में परी अखाड़े को भूमि आवंटित कर सुविधाएं दी गईं हैं, हालांकि हरिद्वार, नासिक और उज्जैन के कुंभ में उन्हें सरकारी सुविधाएं मिलीं थीं, लेकिन अमृत स्नान की अनुमति नहीं मिल सकी थी। महिला संत त्रिकाल भवंता ने 2013 के कुंभ में महिलाओं के लिए अलग अखाड़े की स्थापना की थी। इसके बाद से महिलाओं के लिए अलग से अमृत स्नान की व्यवस्था कराने की मांग उठ रही है, लेकिन 13 मान्यता प्राप्त अखाड़ों के विरोध के कारण अभी तक परी अखाड़े को सफलता नहीं मिल सकी है। अब प्रयागराज महाकुंभ में एक बार फिर परी अखाड़ा इस मुद्दे को लेकर मुखर है। इस संबंध में हाल ही में परी अखाड़े से जुड़ीं महिला संतों ने निरंजनी अखाड़े के प्रमुख और आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरि और जूना अखाड़े के मुख्य संरक्षक एवं अखाड़ा परिषद के महामंत्री स्वामी हरि गिरि से भी वार्ता की, लेकिन बात नहीं बनी। यही नहीं परी अखाड़े से जुड़ी महिला संतों ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भी गुहार लगाई, लेकिन वहां से भी सिर्फ आश्वासन ही हाथ लगा। ऐसे में प्रयागराज महाकुंभ से पहले परी अखाड़े ने एक बार फिर अदालत की शरण ली है। महिलाओं के लिए अलग से अमृत स्नान की व्यवस्था कराने की मांग पर अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष रविंद्र पुरी का कहना है कि 13 अखाड़े ही मान्यता प्राप्त हैं।

आज से शटल बसों में करें मुफ्त सफर, 13 रूटों पर होगा संचालन

प्रयागराज। महाकुंभ मेले के सबसे बड़े स्नान पर्व मौनी अमावस्या के मौके पर यूपी रोडवेज और नगरीय परिवहन सेवा के तहत चल रहीं शटल बसों में 30 जनवरी तक श्रद्धालु मुफ्त सफर कर सकेंगे। इन बसों का संचालन 28 से 30 जनवरी तक 13 रूटों पर होगा। इस दौरान इसमें सफर करने वाले किसी भी यात्री से किराया नहीं लिया जाएगा। शहर में शटल बसों का आगमन भारत स्काउट–गाइड, हिंदू हॉस्टल चौराहा, लेप्रोसी चौराहे तक होगा। इस दौरान 45–45 शटल बसें प्रयागराज जंक्शन और प्रयाग स्टेशन के पास रिजर्व में रखी जाएंगी। वहीं, सूबेदारगंज रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर एक की तरफ 40 और प्लेटफार्म नंबर छह की ओर 30 शटल बसों का प्रबंध किया गया है। इसके अलावा 80 बसें डीएफसी मैदान पर आरक्षित रखी गई हैं। यूपी रोडवेज ने अगले तीन दिन प्रदेश के सभी शहरों के लिए बसें चलाने की तैयारी की है। यहां सभी रीजन की बसें पहुंच भी चुकी हैं। यूपी रोडवेज प्रयागराज रीजन के क्षेत्रीय प्रबंधक एमके त्रिवेदी ने बताया कि कानपुर, झांसी, आगरा, फतेहपुर, कौशाम्बी रूट से आने वाले यात्री नेहरू पार्क से शटल बसों पर बैठ सकेंगे। अयोध्या, लखनऊ, बरेली, सुल्तानपुर और प्रतापगढ़ की ओर से यात्रा कर प्रयागराज आ रहे यात्री बेला कछार में बनाए गए अस्थायी बस स्टेशन से इन बसों में सफर कर सकेंगे। इसी तरह मिर्जापुर, रीवा, बांदा, चित्रकूट, विंध्याचल से आने वाले यात्री शटल बसों से लेप्रोसी चौराहे तक आ सकेंगे।

मौनी का महास्नान कल, संगम से सड़क तक श्रद्धा का रेला, पांटून से पैदल पुल बंद

महाकुंभ नगर (प्रयागराज)। मौनी अमावस्या का महास्नान बुधवार को है लेकिन दो दिन पहले ही स्नान के लिए भारी भीड़ उमड़ी। सोमवार को संगम से लेकर सड़क तक श्रद्धा का रेला उमड़ा। भीड़ बढ़ने पर पांटून पुलों से पैदल भी आवागमन रोक दिया गया। इसकी वजह से संगम के अलावा झूंसी जोन में ऐरावत घाट पर श्रद्धालुओं की ज्यादा भीड़ रही। शास्त्री पुल श्रद्धालुओं से भरा रहा। पैदल चलना भी मुश्किल भरा रहा। यह स्थिति अंदावा चौराहे तक रही। शहर में लोक सेवा आयोग चौराहे से संगम तक स्नानार्थियों का रेला चला आ रहा था। यह क्रम टूटने का नाम नहीं ले रहा था। इसी तरह की स्थिति संगम की तरफ जाने वाली अन्य सड़कों का भी रहा।भीड़ बढ़ने की वजह से दिन में बालसन चौराहे से जवाहर लाल नेहरू मार्ग पर आवागमन रोक दिया गया था।

सम्पादक
सिद्धनाथ द्विवेदी
प्रबन्धक निदेशक
दीपक जयसवाल
सम्पादकीय कार्यालय
11ई/2, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के आधीन होगा।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक सिद्धनाथ द्विवेदी द्वारा काम्पीटेंट बिजनेस सर्विसेज विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित एवं 399 कृष्णानगर कीडगंज से प्रकाशित।
सम्पादक–सिद्धनाथ द्विवेदी, आरएनआई नं. UPHIN/2007/22706 रजि.नं. AD-32/2008-09 ईमेलः amritkt.alld@gmail.com फोन नं. : 9453273951, 8799627062

उत्तर प्रदेश सरकार

आस्था एवं एकता का महासंगम

सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः
महाकुम्भ प्रयागराज 2025

दिव्य-भव्य-डिजिटल
एकता का महाकुम्भ

महाकुम्भ 2025
प्रयागराज में

मौनी अमावस्या

पर अमृत स्नान
29 जनवरी, 2025

महाकुम्भ का संदेश
एकता से अखंड रहेगा देश

आगामी अमृत स्नान पर्व
बसंत पंचमी - 03 फरवरी, 2025 | माघी पूर्णिमा - 12 फरवरी, 2025
महाशिवरात्रि - 26 फरवरी, 2025

आकस्मिक सेवाएँ | मेला प्रशासन | आवास एवं आहार | यूपी की उपलब्धियां

कुम्भ सहायक
वाट्सएप नं. 8887847135
पर 'नमस्ते' भेजें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

mahakumbh_25/ upmahakumbh MahaKumbh_2025 https://kumbh.gov.in/